
Ashta-Laxmi Stotra

अष्टलक्ष्मीस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Ashta-Laxmi Stotra

File name : ashtalaxmistotra.itx

Category : aShTaka, devii, lakShmI, devI

Location : doc_devii

Author : Unknown

Transliterated by : Suprabha Pavuluri

Proofread by : Sunder Hattangadi

Description-comments : Hymn in praise of Laxmi, in her 8 forms

Latest update : Nov. 12, 1999

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org

Ashta-Laxmi Stotra

अष्टलक्ष्मीस्तोत्रम्



॥ आदिलक्ष्मी ॥

सुमनसवन्दित सुन्दरि माधवि
चन्द्र सरोदरि डेममये ।
मुनिगणमण्डित मोक्षप्रदायिनि
मञ्जुलभाषिणि वेदनुते ॥

पङ्कजवासिनि देवसुपूजित
सद्गुणवर्षिणि शान्तियुते ।
जयजय डे मधुसूदन कामिनि
आदिलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ १ ॥

॥ धान्यलक्ष्मी ॥

अडिडलि डलमषनाशिनि कामिनि
वैदिकरूपिणि वेदमये ।
क्षीरसमुद्भव मङ्गलरूपिणि
मन्त्रनिवासिनि मन्त्रनुते ॥
मङ्गलदायिनि अम्बुजवासिनि
देवगणश्रित पादयुते ।
जयजय डे मधुसूदन कामिनि
धान्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ २ ॥

॥ धैर्यलक्ष्मी ॥

जयवश्विनि वैश्रवाणि भार्गवि
मन्त्रस्वरूपिणि मन्त्रमये ।
सुरगणपूजित शीघ्रकृत्वप्रद
ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते ॥

भवभवडाेरिणि पापविमोयनि
 साधुजनाश्रित पाद्ययुते ।
 जयजय हे मधुसूदन कामिनि
 धैर्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ३ ॥
 ॥ गजलक्ष्मी ॥

जयजय दुर्गतिनाशिनि कामिनि
 सर्वकलप्रद शास्त्रभये ।
 रथगज तुरगापदादि समावृत
 परिजनमण्डित लोकनुते ॥
 डरिडर भ्रज्म सुपूजित सेवित
 तापनिवारिणि पाद्ययुते ।
 जयजय हे मधुसूदन कामिनि
 गजलक्ष्मि रूपेण पालय माम् ॥ ४ ॥
 ॥ सन्तानलक्ष्मी ॥

अलिभग वाडिनि मोडिनि थडिणि
 रागविवर्धिनि ज्ञानभये ।
 गुणगणवारिधि लोकडितैषिणि
 स्वरसप्त भूषित गाननुते ॥
 सकल सुरासुर देवमुनीश्वर
 मानववन्दित पाद्ययुते ।
 जयजय हे मधुसूदन कामिनि
 सन्तानलक्ष्मि त्वं पालय माम् ॥ ५ ॥
 ॥ विजयलक्ष्मी ॥

जय कमलासनि सद्गतिदायिनि
 ज्ञानविकासिनि गानभये ।
 अनुदिनमर्थित कुङ्कुमधूसर-
 भूषित वासित वाधनुते ॥
 कनकधरास्तुति वैभव वन्दित
 शङ्कर देशिक मान्य पदे ।

जयजय ले मधुसूदन कामिनि
विजयलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ६ ॥

॥ विद्यालक्ष्मी ॥

प्रज्ञात सुरेश्वरि भारति भार्गवि
शोकविनाशिनि रत्नमये ।
मणिमयभूषित कर्णविभूषण
शान्तिसमावृत हास्यमुખे ॥

नवनिधिदायिनि कलिमलहारिणि
कामित हृलप्रद उस्तयुते ।

जयजय ले मधुसूदन कामिनि
विद्यालक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ७ ॥

॥ धनलक्ष्मी ॥

धिभिधिभि धिधिभि धिधिभि धिधिभि
दुन्दुभि नाद सुपूर्णमये ।
धुमधुम धुंधुम धुंधुम धुंधुम
शङ्भनिनाद सुवाधनुते ॥

वेदपुराणोतिहास सुपूजित
वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते ।

जयजय ले मधुसूदन कामिनि
धनलक्ष्मि उपेण पालय माम् ॥ ८ ॥



Ashta-Laxmi Stotra

pdf was typeset on September 16, 2023



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

